"मक्का"

भूमि का चयन एवं खेत की तैयारी :–

- उत्तम जल निकास एवं पर्याप्त जलधारण क्षमता वाली सभी प्रकार की भूमियों में मक्का की खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है।
- 6.5 से 7.5 पी.एच. मान एवं पोषक तत्वों से भरपूर मध्यम काली एवं दोमट काली मृदा सर्वोत्तम होती है।
- ग्रीष्म ऋतु (मार्च–अप्रैल) में मिट्टी पलटने वाले हल से 3 वर्ष के अन्तराल पर गहरी जुताई करें।
- रबी फसल की कटाई के तुरन्त बाद कल्टीवेटर द्वारा 1 से 2 आड़ी खड़ी जुताई करें।
- वर्षा होने पर कल्टीवेटर द्वारा 1 से 2 जुताई करके पाटा चलाना चाहिए जिससे मिट्टी भुरभुरी हो जाऐ।

उन्नत किस्मे :–

- **शीघ्र पकने वाली किस्में** (80–90 दिन) – जवाहर मक्का–8, जवाहर मक्का–12, पूसा कम्पोजिट–2, पूसा अर्ली हाइब्रिड मक्का–2
- **मध्यम अवधि में पकने वाली किस्में** (90–100 दिन) – जवाहर मक्का–216, जवाहर मक्का–13, एच.पी.क्यू.एम.–1, एच.पी.क्यू.एम.–5
- **देर से पकने वाली किस्में** (100–110 दिन) – गंगा–11, प्रभात, डेकन–103, डेकन–105

बोने का समय :–

- 15 से 30 जून बुवाई का सबसे उत्तम समय है, लेकिन इसे 15 जुलाई तक भी बोया जा सकता हैं।

बीज दर :–

- संकर मक्का के लिये बीजदर 15 किलो एवं संकुल उन्नत जातियों के लिये 18 किलो प्रति हैक्टेयर उपयोग करें।

बीजोपचार :–

- थायरम + कार्बेन्डाजिम (2:1) 3 ग्राम प्रति कि.ग्रा. की दर से तत्पश्चात ऐजोटोबेक्टर एवं पी.एस.बी. कल्चर 5–10 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से बीजोपचार करें।

बुवाई की विधि :–

- समतल खेतों में मेढ़ नाली तरीके से तथा ढालयुक्त खेतों में ढाल के विपरीत दिशा में बोनी करें।
- शीघ्र तथा मध्यम अवधि में पकने वाली किस्मों हेतु कतार से कतार की दुरी 60 से.मी. एवं देर से पकने वाली किस्में को 75 से.मी. की दूरी पर लगायें।
- पौधे से पौधे का अंतर 20 से.मी. रखे एवं बीज 3–4 से.मी. की गहराई पर बोयें।
- पौधों की संख्या 65–80 हजार/हेक्टेयर रखें।
- चौड़ी मेढ– नाली बनाकर हाथ से बीज की बुवाई करने पर उत्पादन अधिक मिलता है।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन :–

- गोबर की खाद/कम्पोस्ट 10 से 15 टन प्रति हेक्टेयर डालने से उत्पादन अधिक मिलता है।
- भूमि में जस्ते की कमी होने पर 25 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट/हेक्टेयर का प्रयोग चार फसल बाद दोहरायें।
- 120 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. स्फुर, 40 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हेक्टेयर दें। उर्वरको की बताई गई मात्रा में 25 प्रतिशत नत्रजन तथा स्फुर व पोटाश की पूरी मात्रा को आधार खाद के रुप में बुवाई से पहले दें। बची हुई नत्रजन की 50 प्रतिशत मात्रा को अंकुरण के 20 से 30 दिन बाद देकर मिट्टी चढ़ाएं तथा शेष बची हुई नत्रजन की 25 प्रतिशत मात्रा को फूल आने पर दें।

जल प्रबंधन :–

- खेत में जल–भराव की स्थिति न बनने दें।
- नर मंजरी एवं मादा फूल निकलते समय दाना भरने की अवस्था पर खेत में नमी की कमी होने की स्थिति में सिंचाई अवश्य करें।

खरपतवार नियंत्रण :–

- पारंपरिक तरीके से खरपतवार का प्रबंधन डोरा आदि चलाकर मिट्टी चढ़ाये।
- रासायनिक खरपतवार नाशियों में एट्राजिन का प्रयोग 1 से 1.25 कि.ग्रा. सि य तत्व/हेक्टेयर 600–700 लीटर पानी में घोल कर बोनी के पश्चात एवं फसल अंकुरित होकर बाहर निकलने के पूर्व प्रयोग करें।

कीट नियंत्रण :–

- **तने की मक्खी** – इमिडाक्लोप्रिड 2.5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. की बीज दर से बीजोपचार करें।
- **तने की इल्ली** – दानेदार कीटनाशी कार्बोफ्यूरान 3 जी दवा पौधों के शीर्ष में 4–6 दानें प्रति पौधा उपयोग करें।
- **रसचूसक कीट** – खेत में नमीं की अवस्था में कार्बोफ्यूरान 3 जी 25 कि.ग्रा./हे. या फोरेट 10 प्रतिशत दानेदार 10 कि.ग्रा./हेक्टेयर का प्रयोग करें।

रोग नियंत्रण :–

- **पर्णचित्ती रोग** – फसल की 40–50 दिन की अवस्था में होने पर कार्बेन्डाजिम 750 ग्राम प्रति हेक्टेयर 500 लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- **मृदारोमिल आसिता** – फसल च , गर्मी की जुताई एवं बीजोपचार करें।

उपज :–

- मक्का की फसल से 45 से 50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती हैं।